करबला के बहेन भाई

श्री विश्व नाथ प्रसाद ''माथुर'' लखनवी

जब से इस सृष्टि की रचना हुई है उस समय से अब तक जो रिश्ते 'सम्बन्ध' वंशीय एवं पारिवारिक हैसियत रखते हैं उनमें भाई और बहन का सम्बन्ध अत्यंत घनिष्ठ सम्बन्ध है । संसार की प्रत्येक जाति में भाई और बहन का चरित्र बहुत उंचा होता है चाहे बहिन आयु में छोटी हो या बड़ी किन्तु बहिन का भाई से प्रेम वह शक्ति होती है जिसको समाप्त नहीं किया जा सकता । इसी प्रकार भाई पर बहिन के प्राकृतिक प्रेम का वह कर्त्तव्य होता है जो केवल जीवन ही में नहीं बल्कि मरने के बाद भी बखाना जाता है । फिर बहिन अगर छोटी हो और सगी हो साथ ही साथ चरित्र भी भाई जैसा उज्जवल एवं स्वच्छ रखती हो तो ऐसी बहिन के प्रेम का अनुमान वही लगा सकता है जिसकी स्वंय कोई बहिन मौजूद हो ।

करबला की घटना जो धार्मिक दृष्टिकोण से सत्य और असत्य तथा धर्म और अधर्म के बीच एक खाई बना देती है और दोनों के बीच का अंतर प्रकट कर देती है और इसी कारण करबला की घटना अपनी तरह की प्रथम और अंतिम घटना मानी जाती है इसी के साथ ही साथ करबला की घटना के विभिन्न पहलू शिक्षाप्रद भी हैं और अनुसरणीय भी उदारणार्थ इमाम हुसैन को ऐसे साथी मिले जो हज़रत मोहम्मद हज़रत अली इमाम हसन और किसी भी पैगम्बर को नहीं मिले या जैसे साहसी एवं वीर पुत्र इमाम हुसैन को मिले किसी को न प्राप्त हुए । उसी प्रकार जैसी बहिन हज़रत इमाम हुसैन की थीं वैसी बहिनें दृष्टिगोचर नहीं होतीं ।

स्त्री के चरित्र को धन धान्य से परिपूर्ण स्थिति में भी देखना चाहिये और जब अत्यंत परेशानियाँ एवं वेदनाएं घेरे हुए हैं उस समय भी स्त्री के आचरण को दृष्टि में रखना चाहिए यद्यपि अत्यंत वैभव के साथ जीवन व्यतीत करने वाली स्त्रियों के धैर्य का अनुमान करना दुष्कर ही है या आरामपूर्वक ज़िन्दगी गुज़ारने वाली स्त्रियों को कठिनाइयों एवं कष्टों के वातावरण का ज्ञान नहीं होता और मुसीबत में जीवन के दिन क्योंकर काटे जाते हैं—इससे वे अनभिज्ञ होती हैं ।

करबला में इमाम हुसैन के साथ जितनी महिलाएं थीं चाहे वे उनकी धर्म पत्नियाँ हों चाहे सुपुत्रियाँ हों अथवा बहनें वे सबकी सब सत्य व धर्म की उत्कृष्ठ उदाहरण थीं और उनमें से प्रत्येक ने अपने कर्त्तव्य का भली प्रकार पालन किया जिसका उदाहरण इस्लामी इतिहास में नहीं मिलता।

मुझे इस संक्षिप्त लेख में ऐसे ही बहिन भाईयों का वर्णन करना है जिनके सद् आचरण एवं आदर्श प्रेम से शताब्दियों पूर्व के व्यक्तियों ने भी शिक्षा ग्रहण की और आगामी शताब्दियों के लोग भी लाभान्वित होते रहेंगे क्यों कि करबला के भाईयों और बहनों ने विश्व को प्रेम का वास्तविक रुप परखने की सद्बुद्धि प्रदान की है।

हज़रत जैनब़ इमाम हुसैन की छोटी बहिन आचार विचार में अपनी माता हज़रत फ़ातिमा का चित्र थीं। उनका विवाह अपने चचेरे भाई हज़रत अब्दुल्लाह सुपुत्र जाफ़र से हुआ था, जिनके लिए प्रसिद्ध है कि अब्दुल्लाह के जीवन—काल में उनसे श्रेष्ठ वीर और दानीमौजूद नही थीं । हज़रत ज़ैनब के दो सुपुत्र भी थे जिनमें से बड़े का औन और छोटे का नाम मोहम्मद था । ये दोनों अपने पिता की आज्ञानुसार अपनी माता हज़रत जैनब और अपने मामा इमाम हुसैन के साथ करबला गये जहाँ माता को ममता ने दोनों के शवों को खून में लथपथ देखने के बाद

अल्लाह को धन्यवाद दिया और हज़रत ज़ैनब ने अपने भतीजे हज़रत अली अकबर का शव देखने के बाद अपने पुत्रों का शोक भुला दिया।

संसार की प्रत्येक स्त्री को अपना घर, अपना पति और अपने पुत्र सर्वाधिक प्रिय होते हैं परन्तु हज़रत ज़ैनब का चरित्र वहीं से शिक्षाप्रद बन जाता है जहाँ से वह भाई को रण–क्षेत्र की ओर जाते हुए देखकर अपने प्रत्येक प्रकार के आराम को तिलाँजलि दे देती हैं। उनका चरित्र मदीने से प्रस्थान करने के बाद से अंतिम साँस तक यह बताता है कि वह अपने भाई पर घर क्या, पुत्रों को भी न्योछावर करना अपना धर्म समझती थीं यहीं नहीं अपितु हज़रत ज़ैनब ने अपने छोटे भाई से भी ऐसा प्रेम किया जिसका उदाहरण इस्लामी इतिहास में ढूँढे नहीं मिलता क्योंकि यह तो संवविदित है कि हज़रत अब्बास का जन्म हज़रत फ़ातिमा के गर्भ से नहीं हुआ बल्कि उनकी माता का शुभ नाम उम्मुल बनीन था। यदि किसी को यह ज्ञात न हो कि हज़रत अब्बास, हज़रत ज़ैनब और हज़रत इमाम हुसैन के सगे भाई न थे, तो वह करबला की घटना और हज़रत अब्बास या हज़रत ज़ैनब के पारस्परिक प्रेम और त्याग–भावना को देखकर यह समझने पर बाध्य है कि हज़रत अब्बास, हज़रत ज़ैनब के सगे भाई थे।

करबला की घटना मानव–समाज के प्रत्येक सम्प्रदाय तथा समुदाय को शिक्षा देती है इसीलिए यह घटना विश्व–इतिहास में अपनी तरह की अद्वितीय घटना समझी जाती है।

संसार ने सौतेले भाईयों के प्रेम को प्रत्येक युग में देखा और यह परिणाम निकाला कि सौतेले भाई बहिन, सगे भाई बहिन के समान प्यार नहीं कर सकते परन्तु करबला में चाहे हज़रत ज़ैनब हों या हज़रत उम्मे कुलसूम, इमाम हुसैन हों या हज़रत अब्बास सबने ऐसे आदर्श प्रेम के प्रमाण प्रस्तुत किए, जिसके उदाहरण केवल करबला ही में मिल सकते हैं। यदि इमाम हुसैन ने हज़रत अब्बास से वैसा प्यार किया जो कोई सगा भाई भी नहीं कर सकता तो हज़रत अब्बास ने भी इमाम हुसैन को सदैव अपना सरदार समझा और स्वयं को दास समझते रहे।

हज़रत उम्मे कुलसूम भी इमाम हुसैन की छोटी बहिन थीं। जब 10 मोहर्रम (आशूर) की रात को इमाम हुसैन की सम्बन्धित स्त्रियों में से प्रत्येक स्त्री ने यह निश्चय किया कि वह इमाम हुसैन पर अपने सुपुत्रों को बलिदान करेंगी जो हज़रत उम्मे कुलसूम शाँत हो गयीं। हज़रत अब्बास अनपनी बहिन की ख़ामोशी का अर्थ समझ गये और उन्होंने पूछ भी लिया कि आप क्यों चुप हैं। हज़रत उम्मे कुलसूम ने कहा कि हज़रत जैनब के दो सुपुत्र मौजूद हैं वह उनको भाई हुसैन पर कुरबान करेंगी। हज़रत उम्मे फ़रवा (इमाम हसन की विधवा) भी दो बच्चों का बलिदान देंगी। यहाँ तक कि उम्मे लैला अपने नवयुवक पुत्र की आहुति देंगी और रबाब (इमाम हुसैन की एक पत्नी का शुभ नाम) छः मास का बालक न्योछावर करेंगी। यदि मेरा भी कोई पुत्र होता तो मैं भी उसे हुसैन की सेवा में अर्पित करती कि वह भी हुसैन के लिए अपना शीश कटा दे, परन्तु शोक है कि मेरा कोई बेटा नहीं है। हज़रत अब्बास ने प्रेमपूर्वक कहा कि आप मुझ को अपनी ओर से हुसैन पर न्योछावर किजिए क्योंकि छोटा भाई भी पुत्र–तुल्य होता है। उसके बाद फिर हज़रत उम्मे कुलसूम चुप नहीं रहीं बल्कि प्रसन्न होकर छोटे भाई को गले से लगा लिया।

इसी प्रकार यह बात भी महत्वपुर्ण है कि हज़रत अब्बास जब अपनी बड़ी बहिन के शिविर (खेमे) में रण–क्षेत्र में जाने से पूर्व विदा लेने आए तो हज़रत ज़ैनब ने अश्रु धारा प्रवाहित करते हुए कहा कि यदि तुम मरने को जा रहे हो तो एक बात सुनते जाओ और वह यह कि एक दिन बचपन में, मैं अपने पिता हज़रत अली के पास बैठी हुयी थी, वह बार–बार मेरी बाहों को चूमते थे। मैंने पूछा कि बाबा आप माथे की अपेक्षा मेरी भुजाओं को क्यों चूम रहे हैं, तो पिता जी ने

जवाब दिया था कि बेटी एक दिन ऐसा आने वाला है जब इन भुजाओं में रस्सी बाँधी जायेगी। तो मैंने कहा था कि इन भुजाओं में रस्सी कौन बाँध सकता है। किसी बहिन का एक भाई होता है तो वह उस पर गर्व करती है, मेरे तो अठ्ठारह भाई हैं। यह कह कर हज़रत ज़ैनब चीख मार कर रोने लगीं और कहा भविष्य–वाणी अब पूरी होने के निकट पहुँच गयी हैं। सब भाई मृत्यु को प्राप्त हुए। अब केवल दो शेष हैं। शोक है कि तुम भी बहिन को छोड़कर शहीद होने जा रहे हो।

इन घटनाओं से विदित हो जाता है कि करबला की घटना में बहिन भाई का चरित्र कितनी पराकाष्ठा को पहुँचा हुआ था। जिससे संसार को सदेव भाई बहिन के प्रेम की सच्ची और वास्तविक शिक्षा मिलती रहेगी।

आधुनिक युग, सम्भवतः बहिन भाई के वास्तविक तथा प्राकृतिक प्रेम का अनुमान न कर सकता हो किन्तु करबला की घटना के प्रत्येक पहलु से यह सिद्ध हो जाता है कि विश्व इतिहास न अब्बास का जैसा भाई पैदा कर सकता है और न ज़ैनब की जैसी बहिन।

साधारणतया घरेलू जीवन में उनके घटनाएं दृष्ठिगोचर होती रहती हैं जिस से किसी धर्म या जाति का घर खाली नहीं हैं। कभी जायदाद पर विरोध हो जाता है। कभी संतान के सम्बन्ध में बहिन भाईयों में आजीवन संघर्ष चलता रहता है। कभी रूपया–पैसा भाई बहिन के प्रेम में बाधक बन जाता है परन्तु करबला की घटना के अध्ययन के बाद प्रत्येक व्यक्ति को यह ज्ञात होता है कि करबला में केवल सत्य–असत्य और धर्म अधर्म के बीच युद्ध न था। बल्कि इस घटना ने मानव कल्याण को भी पढ़ाया है।

चरित्र की परीक्षा आपत्तियों के समय होती है और करबला की घटना में वेदनाएं अपनी चरम सीमा को पहुँच गयी थीं। जहाँ केवल मानवता थी और उसके कर्त्तव्य,शत्रुओं का बाहुल्य व आधिक्य, बाणों की वर्षा, तलवारों की चमक, तीरों की चुभन एक ओर, और दुसरी ओर बहत्तर भूखे प्यासे लोग परीक्षा–स्थल में सत्य–पथ पर बहुमूल्य कुरबानियाँ प्रस्तुत कर रहे थे, जिसका उदाहरण शताब्दियाँ व्यतीत हो जाने के बाद आज तक न मिल सका। केवल हज़रत अब्बास और उम्मे कुलसूम ही का प्रेम प्रशंसनीय नही है बल्कि छः महीने के अली असगर की बहिन भी करबला में मौजूद थीं परन्तु भाई बहिन की इस अल्पायु के बाद भी नन्हीं–सकीना ने जो रोल अदा किया है, क़यामत का दिन भी उसकी मिसाल में इन्हीं दोनों बहिन भाइयों को पेश कर सकता है।

तीन दिन की प्यास से मुश्किल से कोई समय या दिन ऐसा गुजरा जब कि सकीना अपने छोटे भाई के उजड़े हुये फूल को पग न दे रही हों और यह घटना कोई सहृदय भाई भुला नहीं सकता कि इमाम हुसैन की शहादत के बाद जब कोई भी जले हुये खेमों (शिविरों) में बाक़ी न रहा, केवल थोड़े से बच्चे थे और स्वयं हज़रत सकीना गर्म धूल पर बेसुध पड़ी थीं, फ़ुरात की नदी, शोक का एक समुन्द्र मालूम हो रही थी, वातावरण के सन्नाटे में शहीदों के खून की बू फैली हुई थी। उस समय हज़रत हुर (जिन्हों ने इमाम हुसैन पर जान कुरबान की थी, कि धर्मपत्नी कुछ बचा खाना, थोड़े पानी की मशकों को साथ लेकर आयीं और 4 दिन बाद जब पानी प्यासी ज़ैनब को दिखाई दिया तो उन्होंने सब से पहले अपनी भतीजी सकीना को होशियार किया और कहा कि मेरी बेटी यह पानी तू सबसे पहले पी ले क्योंकि तू सबसे छोटी है। उस समय 4 वर्षीय सकीना हाथ में पानी का कूज़ा (पानी–पीने का बर्तन) लेकर मैदान की ओर चलने लगीं तो हज़रत ज़ैनब ने कहा बेटी! कहाँ जा रही हो? हज़रत सकीना ने उत्तर दिया फ़ुफी मुझसे छोटा मेरा भाई अली असग़र है। पहले उसको पानी पिलाऊँ तो फिर खुद पीऊँ।

इस महत्वपूर्ण घटना से भाई–बहिन के उस

(बक़िया पेज नं0 40 पर,.......)

आयतुल्लाह सीसतानी की तरफ़ से अहले सुन्नत भाइयों की मदद्

अहलेबैत न्युज़ एजेन्सी अबना के अनुसार इराक़ की मज़लूम जनता के सैकड़ों परिवार जो पिछले दिनों युद्ध के कारण दर बदर हो चुके हैं इराक़ के शिया मराजे के ज़रिये उनकी सहायता की जा रही है। शहर मूसल और उसके आस पास इलाकों में दाईशी आतंकवादी हमलों में शिदद्त पैदा हो जाने के कारण अहले सुन्नत भाइयों के कई परिवार बे–घर हो चुके हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार शहर शिरक़ात की कई बस्तियों के रहने वाले जिन पर दाईश का कब्ज़ा था फ़रार करके इराक़ी सेना के इलाकों में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जहां उनके लिए अच्छे कैम्प और भोजन एवं वस्त्रों का उचित प्रबंध किया गया है। शीई संसार के मरज–ए–तक़लीद आयतुल्लाहिल उज़्मा हज़रत सै0 अली हुसैनी सीसतानी के कार्यालय ने मानव मित्रता की दृष्टि से इन सभी सुन्नी भाइयों के लिए जीवन की प्रारम्भिक आवश्यकताओं पर आधारित आवश्यक सामग्री को उनके कैम्पों तक पहुंचाया है।

शीई संसार के मरज–ए–तक़लीद आयतुल्लाहिल उज़्मा हज़रत सै0 अली सीसतानी के कार्यालय के प्रबंधक ने मीडिया से वार्ता के बीच कहा कि आयतुल्लाह सीसतानी के कार्यालय ने लगभग 8 हज़ार बे–घर सुन्नी भाइयों के ख़ाने, कपड़े और निवास की ज़िम्मेदारी अपने ज़िम्मे ले रखी है उनको भोजन, वस्त्र एवं आवश्यक साम्रगी पहुंचाई जा रही है।

(बाक़ी पेज नं0 36 का ......)

असीम प्रेम पर प्रकाश पड़ता है जिसका पाठ करबला के भाई–बहिन पग–पग पर पढ़ा रहे थे और संसार को यह सिखाना चाहते थे कि मानव–प्रकृति अपने देश में भी शांति चाहती है और अपने घर में भी शांति की इच्छुक है। हो सकता है कि यज़ीद ने दौलत के नशे में बेसुध होकर अपने अपवित्र नेत्रों से यह दृश्य न देखा हों या उनका अनुभव न किया हो परन्तु हम जानते हैं कि जब बलपूर्वक क़ैदी की हैसियत से हज़रत ज़ैनब दरबार में ले जायी जा रही थीं तो उस समय सर्वश्रेष्ठ वीर हज़रत अली की सुपुत्री हज़रत ज़ैनब क्रोधित हो गयीं और होना भी चाहिये था क्योंकि वह ऐसी विद्वान थीं जिनको शिक्षा देने वाला हज़रत फ़ातिमा के अतिरिक्त और कोई न था।

फिर जिसने पवित्र वातावरण में आँख खोली हो, वह नरकीय, पापी एवं दुष्ट यज़ीद का दरबार देखने पर क्योंकर तत्पर हो जाती इसलिये हज़रत ज़ैनब के दोनों हाथ यज़ीद के अभिशाप के लिये आकाश की ओर उठे।

सूखे होंठ हिलने ही वाले थे कि भाई के सर पर नज़र पड़ी, देखा कि हुसैन के नेत्रों से आंसू बह रहे हैं जिसका आशय यह था कि बहिन धैर्य धाराण करो और दरबार में चली जाओ क्योंकि सत्य, असत्य के पर्दे में छुप जाने के बाद भी सत्य रहता है और असत्य, रत्नों और आभूषणों की चमक–दमक में भी अपनी सीमा से आगे नहीं बढ़ सकता। संक्षेप में, चाहे वह हुसैन और ज़ैनब हों, चाहे अब्बास और हुसैन हों या अली असग़र और सकीना हों परन्तु करबला के इन बहिन भाईयों के उस आदर्श प्रेम से इनकार नहीं किया जा सकता जो आज भी मानव–समाज के लिये शिक्षाप्रद है और क़यामत तक शिक्षा देता रहेगा।